भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद

नव-उदारवाद, उपभोग एवं संस्कृति

पर

43वां अखिल भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन 9-12 नवम्बर, 2017

रैगिंग : दण्डनीय अपराध

आयोजकः

समाजशास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
उत्तर प्रदेश, भारत

आमंत्रण

हमें समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा “नव उदारवाद, उपभोगवाद व संस्कृति” नामक विषयवस्तु पर दिनांक 9 से 12 नवम्बर, 2017 के मध्य समाजशास्त्रीय परिषद के तैतालिसवें अखिल भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन में आपको आमंत्रित करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। यह सम्मेलन भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद के विभिन्न शोध समितियों एवं तदर्थ समूहों में प्रस्तुत किये जाने के लिए अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यमों में शोध प्रपत्रों को आमंत्रित करता है। प्रस्तुत किये जाने वाले शोध प्रपत्र सम्मेलन के मुख्य विषय वस्तु को ध्यान में रखते हुए तैयार किये जाएंगे।

सम्मेलन की विषयवस्तु

नव-उदारवाद, उपभोग एवं संस्कृति

1990 के प्रारम्भ से, भारत सरकार ने इस विचार को आगे बढ़ाया कि राज्य नियोजन से जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं हैं 'बाजार' उससे ज्यादा लाभदायक है जिसे नव-उदारवाद कहा गया, इस विचार ने एक विकासात्मक प्रारुप और शैक्षिक प्रारुपिकी को स्थापित किया जिसने अलग से आर्थिक नीतियों को प्रोत्साहित किया, डिजिटल तकनीक के प्रयोग की गति को बढ़ाया, जिसने वस्तुओं का चलन और मुद्रा बाजार की कुशलता एवं व्यवस्था को तर्कसंगत बनाया। नव उदारवाद से जुड़ी हुई प्रक्रिया को समर्थन देने के लिए सरकार ने नई संस्थाओं को जन्म दिया साथ ही पुरानी संस्थाओं को चलन से बाहर कर दिया, कानूनी तौर तरीकों को भी बदला गया, तृतीयक क्षेत्र के निजीकरण को बढावा दिया गया जैसे कि बिजली, सड़कें, परिवहन, और संचार, साथ ही विनिर्माण और आवास, आतिथ्य सत्कार, और पर्यटन व्यवसाय, पेशेवर शिक्षा और स्वास्थय में, रियल स्टेट और भूमि बाजार के साथ प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि पानी को नये आर्थिकी के रुप में प्रोत्साहित किया गया।

इसके परिणामस्वरूप नगरीकरण का विस्तार हुआ और साथ ही नगरीय जीवन को बढावा दिया जो आधुनिक और वैश्विक है। इस परिप्रेक्ष्य में आजकल समाजशास्त्रीय इसकी पड़ताल कर रहे है कि स्थानों के किस प्रकार के नक्शे, योजनाएं, प्रारुप, वास्तुनिर्माण, डिजाइन एवं इसका प्रस्तुतिकरण व निर्माण किये जा रहे हैं। वे इससे जुड़े+s प्रश्न कर रहें हैं कि नये शहरों (गुरुग्राम, नया रायपुर, राजहाट, अमरावती) से जुड़ी वार्ताओं, नीतियों और प्रक्रियाओं के बारे में जिन्होंने इन नये शहरों को व्यवस्थित किया साथ ही शासन का डिजिटलीकरण पहले से मौजूद शहरों (स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के द्वारा) के जीवन को अवरोधित किया, मिले हुए जनतांत्रिक अधिकारोंsa को प्रभावित किया, बसी हुई आबादी को विस्थापित किया, किसानो एवं कृषकों के बीच संघर्ष पैदा किया, साथ ही स्थानीय, क्षेत्रीय और पारदेशीय प्रवसन को बढावा दिया, कार्य के असंगठित रुप को बढ़ावा दिया है, घरों और शहरी सेवाओं के वितरण में असमानताओं को बढाया है, पारिस्थितकीय संतुलन को प्रभावित किया है, तथा शहरी क्षेत्रों में एक नये प्रकार के सामाजिक वहिष्करण को जन्म दिया है । शोधकर्ताओं ने अग्रलिखित विषयों को उजागर किया है जैसे कि गरीबों के द्वारा नये प्रकार के परियोजन, राजनीति की प्रकृति का आंकलन और शहरी भारत के समकालीन संघर्षो का आंकलन तथा संघर्षो ने कस्बों और शहरों की व्यक्तिगत व सामूहिक हिंसा की प्रकृति को कैसे बदला, इसकी भी उन्होंने पड़ताल की है। साथ ही शहरों और कस्बों में सांस्कृतिक सामाजिक पारिस्थितकी की सुरक्षा से जुडी मांगों के निर्माण को भी स्थान दिया है।

नव उदारवादी चर्चाओं में यह विचार विमर्श है कि व्यक्तिगत उपभोक्ता का उपभोग ही उत्पादन को प्रोत्साहित करता है। नव-उदारवाद इस प्रकार से नये प्रकार की जीवनशैली विशेषकर प्रेरणादायक वर्ग जिन्हें मध्यम वर्ग कहा जाता है उनके लिए प्रोत्साहन देता है जो कि बाजार के विस्तार के लिए एक कुंजी है। मध्यम वर्ग पर किये गये समाजशास्त्रीय शोध प्रश्नों की एक लंबी श्रृंखला खड़ी करते है। जैसे कि पहला प्रश्न- मध्यम वर्ग का झुकाव क्या है? इन वर्गों को कैसे परिभाषित और चिन्हित किया जा सकता है?S इसका आकार, संस्तरण, संख्या एवं क्षेत्रीय फैलाव क्या है? द्वतीय प्रश्न- क्या मध्यम वर्ग सांस्कृतिक रुप से विभाजित है? जाति, जेंडर, नृजातीयता, धार्मिक जुड़ाव और इनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पूंजी साथ ही आधुनिक अनेकरुपता, वहिष्करण/विभेद, संस्तरण, संघर्ष आदि इन वर्गों के बीच क्या भूमिका निभाते हैं? क्या इसमेंsa मध्यम वर्ग अभिजन की उपस्थिति भी है? इनकी सांस्कृतिक और सामाजिक पूंजी क्या है? तीसरा प्रश्न- मध्यम वर्ग का पुनर्उदय किन-किन जगहों पर हो रहा है? क्या मध्यम वर्ग सामाजिक उपभोग जैसे कि भोजन के उपभोग, आवास (समुदायों), कला (दीर्घाओं), 'k,fiax e,y, मनोरंजन (फिल्में और टीवी धारावाहिक), सामाजिक मीडिया (फेसबुक, ट्विटर और इंटरनेट समुदायों), सौंदर्य (सौंदर्य सैलून, स्पा, फैशन की घटनाओं) और धार्मिक मनोभाव (अक्षरधाम, तिरुपति, हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती दरगाह, अजमेर) इन सभी चीजों से पुनर्उत्पादित होता है?

चौथा प्रश्न- क्या ये सब मध्यम वर्ग राजनीति है? मध्यमवर्गीय सामाजिक संगठन तथा इनके पक्षकार समसामयिक राजनैतिक दल एवं उनकी प्रक्रियाओं तथा स्थानों के उत्पादन तथा राजनीतिक प्रक्रिया में किस प्रकार की भूमिका अदा करते हैं? अन्ततः बड़े सामाजिक स्तर पर जीवनशैली में बढ़ती हुई उपभोक्ता प्रवृत्ति किस प्रकार के संघर्षों को पैदा करती है?

43वां अखिल भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन चार पूर्ण सत्रों में इन प्रश्नों पर परिचर्चा करेगाः

1. भारत का नगरीय रुपान्तरण।
2. मध्य वर्ग और उनकी उम्मीदें।
3. शक्ति, अधिनायकत्व एवं प्रभुत्व।
4. क्षेत्रीय सत्र उत्तर प्रदेश में नवउदारवाद, उपभोग एवं संस्कृति।

सारांश जमा करने के दिशा निर्देशः

- प्रतिभीगी अपने सारांश को बिना ISS और शोध समितियों (Research Committee) /तदर्थ समूह (Ad hoc Groups) की सदस्यता लिये अपलोड नही कर पायेंगें। आपसे निवेदन है कि आप ISS वेबसाइट पर जाकर दिये गए फार्म या सम्मेलन के लिए दिये गये लिंक पर जाकर सद्स्य बन सकते हैंSa।
- सारांश केवल हिन्दी और इंग्लिश में ही स्वीकार किया जाएगा।
- सभी सारांश (चाहे हिन्दी या अंग्रेजी) को PDF प्रारुप में ही अपलोड किया जा सकेगा। सारांश 300 शब्दों से अधिक होने पर स्वीकार्य नही होगा।
- सारांश को अपलोड करने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2017 है।
- सारांश जमा करने एवं स्वीकृति से जुडी जानकारी कार्यालय सचिव, ISS, societyinsoso@gmail.com पर प्राप्त की जा सकती है।

दिए गए प्रारुप के आधार पर सारांश का चयन किया जाएगाः

- सम्मेलन की मुख्य विषयवस्तु से जुडे शीर्षक
- सारांश की अवधारणात्मक स्पष्टता
- सारांश में पद्धतिशास्त्रीय प्रयोगात्मकता
- सारांश के शीर्षक की समाजशास्त्रीय महत्व/प्रासंगिकता

शोध समितियों (Research Committee) /तदर्थ समूह (Ad hoc Groups) में स्वीकार किये गये सारांशों की सूची को 1 अक्टूबर 2017 कोs www.insoso.org पर अपलोड किया जाएगा। स्वीकृत किये गये सारांशों के प्रतिभागियों को अपना शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए 15 मिनट का समय मिलेगा। साथ ही पोस्टर के माध्यम से प्रस्तुतीकरण के लिए 5 मिनट का समय मिलेगा।

सम्मेलन पंजीकरण: पंजीकरण आनलाईन किया जाएगा। कृपया www.insoso.org देखें।

सभी प्रतिभागियों को अपना पंजीकरण शुल्क दिए गए विवरण के अनुसार जमा कराना होगाः

विभिन्न तिथियाँ	प्रतिभागी	छात्र		किसी अन्य व्यक्ति के साथ	विदेशी प्रतिभागी* US $
	आवास रहित रु0	आवास सहित रु0	आवास रहित रु0		
31 अगस्त, 2017	2200	2200	1700	3500	150
30 सितम्बर, 2017	2700	2700	2200	4000	160
31 अक्टूबर, 2017	3200	3200	2700	4500	170
आयोजन स्थल पर पंजीकरण	3700	3700	3200	5000	200

* सार्क देशों के प्रतिभागियों सहित

सम्मेलन के पंजीकरण के लिए दिशा निर्देश

- प्रतिभागियों के पंजीकरण की राशि में सम्मेलन के लिए आवश्यक सामान सहित बैग तथा 9.11.2017 का रात्रिभोज तथा 12.11.2017 का मध्याहन भोज एवं 10 और 11 नवम्बर 2017 का नाश्ता, मध्याहन भोज तथा रात्रिभोज शामिल है।
- छात्रों के लिए आवास सहित पंजीकरण की राशि में सम्मेलन की अवधि तक आवास उपलब्ध कराया जाएगा। इसमें सम्मेलन के लिए आवश्यक सामान सहित बैग तथा 9.11.2017 का रात्रिभोज तथा 12.11.2017 का मध्याहन भोज एवं 10 और 11 नवम्बर 2017 का नाश्ता, मध्याहन भोज तथा रात्रिभोज शामिल है।
- छात्रों के आवास रहित पंजीकरण में सम्मेलन के लिए आवश्यक सामान सहित बैग तथा 9.11.2017 का रात्रिभोज तथा 12.11.2017 का मध्याहन भोज एवं 10 और 11 नवम्बर 2017 का नाश्ता, मध्याहन भोज तथा रात्रिभोज शामिल है।
- पंजीकरण की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर, 2017 है। इस तिथि के पश्चात पंजीकरण केवल 9-12 नवम्बर, 2017 को आयोजन स्थल पर होगा तथा इसमें आवास के लिए किसी प्रकार का वादा नही किया जाएगा।
- प्रतिभागी को अपनी राशि दिए गए बैंक खाता विवरण के अनुसार इंटरनेट बैंकिग] NEFT, RTGS तथा बैंक खाते में नकद राशि अतिरिक्त शुल्क (रु. 58) सहित जमा करा सकते हैं।

  बैंक खाता का विवरण:

  खाता का नाम: Forty Third AISC
  चालू खाता संख्या: 36892939184
  बैंक का नाम: State Bank of India
  शाखा: Lucknow University
  आईएफएससी नं0: SBIN0014906

- अगर आप बैंक में नकद राशि जमा करते हैं तो बैंक आपसे इसके लिए कुछ शुल्क भी वसूल करेगा। बैंक में शुल्क जमा करने से पूर्व कृपया इस शुल्क के बारे में बैंक से जानकारी अवश्य हासिल कर लें। जैसे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के लिए यह शुल्क रु. 58 है। इस प्रकार यदि आप 31 जुलाई 2017 तक पंजीकरण करते हैं तो आपको 2258/- (2200 + 58) रुपये का भुगतान करना होगा और यदि 31 अक्टूबर 2017 तक पंजीकरण करते हैं तो आपको 3758/- रुपये का भुगतान करना होगा।
- ऑनलाईन या किसी अन्य माध्यम से बैंक में पंजीकरण राशि जमा कराते वक्त निर्धारित स्थान पर प्रतिभागी का नाम लिखना अनिवार्य है।
- कृपया यह भी ध्यान दे कि पंजीकरण के लिए नकद, चेक, बैंक ड्राफ्ट, पेटीएम, डेबिट/क्रेडिट कार्ड/मोबाइल बैंकिंग ट्रांजेक्शन आदि स्वीकार नही किया जाएगा।

आवास संबंधित विवरण

प्रतिभागियों से निवेदन किया जाता है कि वे अपने होटल रुम की बुकिंग 43वें अखिल भारतीय समाजशास्त्रीय सम्मेलन के माध्यम से www.oyo.com बेबसाइट पर कर सकते हैं। यह बेबसाइट सम्मेलन के प्रतिभागियों के लिए विशेष रियायती दर पर यह सुविधाएं प्रदान करेगी। प्रतिभागियों को यह रियायती दर सम्मेलन का पंजीकरण नंबर देने के पश्चात ही प्राप्त होगी, पंजीकरण संख्या आयोजकों द्वारा प्रतिभागियों को पंजीकरण के 72 घंटों के अंदर ईमेल द्वारा भेज दी जाएगी।

यात्रा

प्रतिभागियों से यह विनम्र निवेदन किया जाता है कि एयरपोर्ट/रेलवे स्टेशन/बस स्टेशन तथा ठहरने के स्थान से लेकर सम्मेलन स्थल (लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर) तक आने जाने की परिवहन संबंधी व्यवस्था आपको स्वयं करनी होगी। प्रतिभागी उबेर/ओला/शेयरआटो/साइकिल-रिक्शा/तांगा/आटोरिक्शा/ई-रिक्शा/सिटी बस का प्रयोग कर सकते हैं। ओला और उबेर विशेष रियायती दर पर यह सुविधा आयोजकों द्वारा दिये गये विशेष कोड के माध्यम से प्रदान करेंगें।

लखनऊः एक संक्षिप्त परिचय

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ गोमती नदी के तट पर स्थित है जो कि वास्तविक रुप से अवध क्षेत्र कहलाता है। लखनऊ अपनी शुरुआत से ही बहुसांस्कृतिक शहर रहा है तथा 18वीं व 19वीं शताब्दी में उत्तर भारत की सांस्कृतिक तथा कलाकृति की राजधानी रहा है। शहर के शिया नवाबों द्वारा संरक्षित तहजीब, नवाबी संस्कृति, खूबसूरत बाग, कविताएं, संगीत तथा बढ़िया भोजन भारतीय तथा दक्षिण एशियाई संस्कृति तथा इतिहास के छात्रों के बीच बेहद लोकप्रिय है। लखनऊ मुख्य रुप से नवाबों के शहर के नाम से प्रसिद्ध है। हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थल अयोध्या, लखनऊ से 135 किमी. की दूरी पर स्थित है। सम्मेलन के दौरान यहां का तापमान 30-13 से0 तक रहने की संभावना है। लखनऊ के बारे मे सम्पूर्ण जानकारी www.up-tourism.com पर भी उपलब्ध है।

समाजशास्त्र विभाग के विषय में:

समाजशास्त्र विभाग इस देश का अत्यन्त पुराना विभाग है जिसका इतिहास 1922 से शुरु होता है। यह विभाग कई निष्ठावान लोगों के नेतृत्व से अलंकृत रहा है जैसे प्रो0 राधाकमल मुखर्जी, प्रो0 डी. पी. मुखर्जी, प्रो0 डी.एन. मजूमदार, तथा प्रो0 ए.के. सरन । साथ ही इसने कई प्रख्यात समाजशास्त्रियों को भी जन्म दिया है जैसे प्रो0 योगेन्द्र सिंह, प्रो0 टी.एन. मदन, प्रो0 के.एन. शर्मा, प्रो0 बी.आर. चौहान, तथा अन्य बहुत से विद्वान। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस विभाग को 1992 से 2002 तक 10 वर्ष की अवधि के लिए विशेष अनुदान का विभाग (डीएसए) का दर्जा दिया गया। यह विभाग विभिन्न शोध परियोजनाओं तथा सलाहकारी सेवाओं में भी सक्रिय रुप से भागीदारी निभा रहा है। साथ ही भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद की शासी निकाय तथा कई अन्य राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय शैक्षिक निकायों में भी समाजशास्त्र विभाग के विभिन्न अध्यापक प्रतिनिधित्व करते रहे हैं। विभाग समाजशास्त्रीय शोध से जुड़े क्षेत्रों- परम्परा, आधुनिकता, पर्यावरण, वैश्वीकरण, लिंग, प्रवास और सामाजिक आन्दोलन में सक्रिय रुप से जुड़ा रहा है।

लखनऊ कैसे पहुंचेः

लखनऊ उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित एवं इसके प्रमुख शहरों में से एक है। यह भारत के प्रमुख शहरों से सड़क, रेल तथा वायुमार्ग द्वारा जुड़ा है। लखनऊ हवाई अड्डा शहर से 14 किमी. की दूरी पर स्थित है। दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलूरु, हैदराबाद, पुणे, जयपुर तथा मुंबई दैनिक वायुसेवा द्वारा लखनऊ से जुड़े है। भारत के ज्यादातर सभी प्रमुख शहर रेलवे द्वारा लखनऊ से जुड़े हुए हैं। सड़कों के विशाल संजाल द्वारा लखनऊ भारत के अधिकांश प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। प्रमुख राजमार्ग जैसे एनएच 24, एनएच 28 तथा एनएच 56 लखनऊ से गुजरते हैं। निजी बसें नियमित रुप से प्रमुख शहरों जैसे आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, दिल्ली तथा देहरादून के लिए चलती हैं।

आयोजक समिति

संरक्षक: प्रो0 एस.पी. सिंह, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

सदस्य:

प्रो0 सुजाता पटेल, अध्यक्ष, भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद

प्रो0 आभा चौहान, सचिव, भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद

प्रो0 बिश्वजीत घोष, कोषाध्यक्ष, भारतीय समाजशास्त्रीय परिषद

समस्त पत्राचार इस पते पर होंगेः

प्रो0 डी.आर. साहू

आयोजक सचिव, 43वां एआईएससी,

समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय,

लखनऊ, 226007, उत्तर प्रदेश

ईमेल: 43aisclucknow@gmail.com

बेबसाइट: www.insoso.org / www.lkouniv.ac.in

सम्मेलन कार्यालय नं0: 8574786578/7007782961